17 सितम्बर 2010, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
# पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

**बिना मूलतत्त्व के अभ्यास के यदि एक अंधश्रद्धा छूट भी गई तो दूसरी उत्पन्न हो जायेगी।**

**- सत्य की खोज, पृष्ठ-26**

**वर्ष : 33, अंक : 12** सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

सितम्बर (द्वितीय), 2010 सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

## श्री पंचास्तिकाय परमागम विधान एवं आध्यात्मिक शिविर संपन्न

**देवलाली-नासिक (महा.) :** यहाँ आषाढ माह की अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर कविवर राजमलजी पवैया द्वारा विरचित श्री पंचास्तिकाय परमागम मंडल विधान एवं आध्यात्मिक शिविर सानन्द संपन्न हुआ।

इस अवसर पर प्रात: पूजन विधान के उपरान्त गुरुदेवश्री कानजी स्वामी के सी.डी. प्रवचनों का एवं तत्पश्चात् पण्डित ज्ञानचंदजी विदिशा के पंचास्तिकाय परमागम पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर एवं रात्रि में पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर के पांच अस्तिकाय पर मार्मिक व्याख्यान हुये। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के पश्चात् पण्डित बाबूभाई द्वारा शिक्षण कक्षायें ली गयीं। इनके अतिरिक्त श्री बसंतजी बड़जात्या सोनागिरि, पण्डित केशरीमलजी पाटनी सोनागिरि, पण्डित विमलचंदजी पाटनी ग्वालियर, ब्र.अमृतभाई देवलाली, डॉ. मुकेशजी तन्मय शास्त्री विदिशा आदि विद्वानों का भी लाभ प्राप्त हुआ। **- मुकुन्द एम. खारा**

## श्री पद्मनन्दि पंचविंशतिका का प्रकाशन

**नागपुर (महा.) :** यहाँ इतवारी स्थित श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट द्वारा श्रीमद् आचार्य पद्मनन्दि द्वारा विरचित सुप्रसिद्ध वृहद्काय ग्रन्थराज **श्री पद्मनन्दि पंचविंशतिका** का पुन: प्रकाशन किया जा रहा है।

इसका प्रकाशन लगभग 15 वर्ष पूर्व **ब्र.यशपालजी जैन जयपुर एवं डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर** के संयुक्त सम्पादकत्व में श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट नागपुर की ओर से किया गया था। बहुत लम्बे अन्तराल से इसकी प्रतियाँ अनुपलब्ध होने से उसकी मांग निरन्तर बनी हुई थी, इसे देखते हुए उक्त संस्था ने इस ग्रन्थ के नई साज-सज्जा के साथ पुन: प्रकाशन का दायित्व उठाया है।

इसके साथ ही आचार्य सूर्यसागरजी द्वारा विरचित चरणानुयोग सम्पोषित **भक्ष्याभक्ष्य विचार** नामक एक लघु पुस्तिका का प्रकाशन भी होने जा रहा है।

जो भी महानुभाव, स्वाध्याय मण्डल, मन्दिर, ट्रस्ट, संस्था आदि इन दोनों कृतियों के ऑर्डर बुक कराना चाहते हों, वे हमसे शीघ्र ही सम्पर्क करें, ताकि प्रतियों के प्रकाशन की संख्या निश्चित की जा सके।

**संपर्क सूत्र -** अशोककुमार जैन, मन्त्री
फोन - (0712) 2772378, 2766369
जितेन्द्रकुमार राठी, प्रबन्ध सम्पादक
मोबाइल - 09890582420

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का -

## 32वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन जयपुर में

(शनिवार, दिनांक 16 अक्टूबर 2010)

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का बत्तीसवाँ राष्ट्रीय अधिवेशन शनिवार दिनांक 16 अक्टूबर 10 को आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में आयोजित होने जा रहा है।

अधिवेशन में फैडरेशन द्वारा अब तक किये गये कार्यों की समीक्षा तथा आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा तय की जायेगी।

इस अधिवेशन में फैडरेशन की शाखाओं के सदस्य तो उपस्थित होंगे ही आप सभी आत्मार्थी महानुभाव भी इस अवसर पर सादर आमंत्रित हैं।

**कृपया अपने आगमन की पूर्व सूचना निम्नांकित सम्पर्क सूत्रों पर अवश्य देवें, ताकि आपके आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था की जा सके।**

**सम्पर्क सूत्र -** पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल, महामंत्री
Mob. : 9870016988, E-Mail : parmatmb@yahoo.com
पण्डित पीयूषकुमार शास्त्री, संगठन मंत्री, जयपुर
Mob. : 9785643202. E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com

## 29वाँ जैन अध्यात्म महोत्सव सम्पन्न

**मुम्बई :** जैन अध्यात्म स्टडी सर्कल्स फैडरेशन, मुम्बई द्वारा दि. 4 सितम्बर से 11 सितम्बर 2010 तक आयोजित 29वाँ जैन अध्यात्म महोत्सव (पर्यूषण व्याख्यानमाला) के अंतर्गत मुम्बई के विभिन्न सर्कल्स चौपाटी, ताडदेव, दादर, वालकेश्वर, घाटकोपर, मांडवी आदि में आध्यात्मिक प्रवक्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित ज्ञानचन्दजी विदिशा, पण्डित अभय कुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित गुलाबचन्दजी बीना, पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं पण्डित श्रेयांसजी शास्त्री जबलपुर के विभिन्न विषयों पर हुए व्याख्यानों का लाभ उपस्थित जन समुदाय को मिला।

# शिवि

# पत्रिका

सम्पादकीय – 42

## पंचास्तिकाय : अनुशीलन

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

### गाथा– ६६

विगत गाथा ६५ में कहा है कि – आत्मा जब मोह-राग-द्वेषरूप भाव करता है तब वहीं स्थित पुद्गल वर्गणायें अपने स्वभाव से जीव के साथ एक क्षेत्रावगावरूप कर्मभाव को प्राप्त होते हैं।

अब इस ६६वीं गाथा में कहते हैं कि – कर्मों की विचित्रता (बहु प्रकारपना) अन्य द्वारा नहीं की जाती।

मूल गाथा इसप्रकार है –

**जह पोग्गलदव्वाणं बहुप्पयारेहिं खंधणिव्वत्ती।**
**अकदा परेहिं दिट्ठा तह कम्माणं वियाणाहि ।।66।।**

(हरिगीत)

**ज्यों स्कन्ध रचना पुद्गलों की अन्य से होती नहीं।**
**त्यों करम की भी विविधता परकृत कभी होती नहीं ।।66।।**

मूलगाथा में आचार्य कुन्दकुन्द कहते हैं कि जिसप्रकार पुद्गल द्रव्यों की अनेक प्रकार की स्कंधरचना पर के किए बिना ही होती दिखाई देती है, उसीप्रकार कर्मों की बहु प्रकार की संरचना पर से अकृत ही होती है।

समयव्याख्या टीका में आचार्य श्री अमृतचन्द्रजी कहते हैं कि – कर्मों की विचित्रता अन्य द्वारा नहीं की जाती – ऐसा यहाँ कहा है।

जिसप्रकार चन्द्र सूर्य प्रकाश की उपलब्धि होने पर संध्या, बादल, इन्द्रधनुष आदि अनेक प्रकार के पुद्गल स्कन्धों के भेद अन्य कर्त्ता की अपेक्षा बिना ही उत्पन्न होते हैं, उसीप्रकार अपने योग्य जीव परिणाम की उपलब्धि होने पर ज्ञानावरणादिक अनेक प्रकार के कर्म भी अन्य कर्त्ता की अपेक्षा बिना ही उत्पन्न होते हैं।

तात्पर्य यह है कि – कर्मों की विविध-प्रकृति, प्रदेश स्थिति अनुभाग रूप विचित्रता भी जीवकृत नहीं है, पुद्गलकृत ही हैं।।६६।।

कवि हीरानन्दजी काव्य की भाषा में कहते हैं –

( दोहा )

**जैसें पुद्गल दरब कै, सहजि बहुत परकार।**
**जैसे करम समूह है, बिना और करतार।।३१३।।**

( सवैया इकतीसा )

**जैसें नभ माँहि चन्द सूरज का निमित्त पाय,**
**नानाकार रूप होई अनदर्व पूरै है।**
**कहूँ साँझ फूले कहूँ वादर अनेक रूप,**
**इन्द्र का धनुष परिवेष चन्द-सूर है।।**
**तैसे कारमन पुंज लोकाकास माहि भरै हैं,**
**करै काहु नाहिं सदा साहजीक नूर है।**
**जीव का निमित्त पाय, आठकर्मरूप होइ,**
**वस्तु का स्वभाव और मानै सोई-कूर है।।३१४।।**

( दोहा )

**सोई वस्तु-सुभाव है, जो परभाव न लेइ।**
**पर मिलाप यद्यपि लसै, तदपि आपरस देइ।।३१५।।**

कवि हीरानन्दजी के काव्यों का तात्पर्य यह है कि – जिसप्रकार पुद्गल द्रव्य सहजभाव से ही स्वयं ही अनेक प्रकार से परिणमित होता है, उसीप्रकार कर्म समूह भी सहज ही बिना कर्त्ता के स्वयमेव परिणमनशील है।

जिसतरह आकाश में चन्द्र एवं सूर्य का निमित्त पाकर अणु नाना रूप से परिणमता है। जिसप्रकार आकाश में इन्द्र धनुष के रूप आकृति बनती है, उसीप्रकार आकाश में जो कार्माण समूह भरे हुए हैं, उन्हें किसी ने बनाया नहीं है। वे जीव के भावों का निमित्त पाकर आठ कर्म के रूप में स्वतः परिणमित होकर रहते हैं। यही वस्तु का स्वरूप है।

इसी बात को गुरुदेव श्री कानजीस्वामी कहते हैं कि जैसे पुद्गल द्रव्यों के नाना प्रकार के भेदों से परिणत स्कन्ध अन्य द्रव्यों के द्वारा न किए जाकर अपनी स्वयं की शक्ति से उत्पन्न हुए स्कन्धों के रूप में देखे जाते हैं, वैसे ही कर्मों की विचित्रता है।

जिसतरह पुद्गलद्रव्य के जो अनेक प्रकार के स्कन्ध देखे जाते हैं, वे स्कंध स्वयं के कारण हुए हैं, आत्मा के कारण या अन्य किसी दूसरे द्रव्यों के कारण नहीं, उसी प्रकार कर्मों की विचित्रता समझना। यद्यपि जितनी मात्रा में जीव राग करता है, उतनी मात्रा में ही कर्म बँधते हैं? तो भी जीव उनका कर्त्ता नहीं है। तो फिर जीव शरीर का या बाह्य पदार्थों का कर्त्ता कैसे हो सकता है? नहीं हो सकता।

सम्पूर्ण कथन करने का तात्पर्य यह है कि कर्मों की जो विचित्रता है, बहुप्रकरता है, वह अन्य द्वारा नहीं जाती। कर्मों की विविधता अर्थात् प्रकृति प्रदेश स्थिति एवं अनुभागरूप विचित्रता जीवकृत नहीं है, पुद्गलकृत ही है। ●

## प्रवेश फार्म शीघ्र भेजें

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 की शीतकालीन परीक्षा जनवरी 2011 के प्रवेशफार्म संबंधित सभी परीक्षा केन्द्रों को भेजे जा चुके हैं। डाक की गड़बड़ी से जिन्हें नहीं मिले हों, वे पोस्टकार्ड द्वारा जानकारी भेजकर मंगवा लेवें।

**– ओ.पी. आचार्य (विभागाध्यक्ष)**

# मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार

## 60 पन्द्रहवाँ प्रवचन – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

**(गतांक से आगे...)**

हमने ऐसे बहुत से निश्चयाभासियों को देखा है कि जिनके विषय-कषाय की प्रवृत्तियों में तो कोई कमी नहीं आई; पर शुभ को हेय मानकर धार्मिक प्रवृत्तियों में तो चित्त नहीं लगाते और प्रात: से ही चाय-पानी, खाने-पीने और धंधे में लग जाते हैं, लगे रहते हैं।

**जब उनसे कहते हैं कि शुभभाव से धर्म नहीं है, इसलिए तुम उनसे विरक्त हो; पर अशुभभावों में कौन सा धर्म है ? जो दिन-रात उसी में रचे-पचे रहते हो, तो उनका उत्तर होता है कि कामादिक और भूख-प्यास मिटाने के लिए अशुभ प्रवृत्ति तो सहज होती है, करनी ही पड़ती है; पर शुभप्रवृत्ति इच्छा पूर्वक करनी पड़ती है, परन्तु ज्ञानीजनों की दृष्टि में इच्छा अच्छी नहीं है; अत: शुभ का उद्यम करना ठीक नहीं है।**

अरे, भाई ! शास्त्राभ्यास आदि शुभ प्रवृत्ति से ज्ञान लाभ के साथ-साथ अशुभ से भी बचाव होता है; अत: भले ही पुण्यलाभ के लिए शुभभाव न करें; पर **अशुभ से बचने के लिए तो शुभोपयोग में प्रवृत्ति होना योग्य ही है।**

इसप्रकार इस चर्चा समापन करते हुए पण्डितजी लिखते हैं –

**''इसप्रकार अनेक व्यवहारकार्यों का उत्थापन करके जो स्वच्छन्दपने को स्थापित करता है, उसका निषेध किया।[१]''**

देखो, पण्डितजी ने एक ही वाक्य में उक्त प्रकरण से संबंधित संपूर्ण चर्चा का निष्कर्ष प्रस्तुत कर दिया।

संपूर्ण कथन का निष्कर्ष यह है कि निश्चयाभासी गृहीत मिथ्यादृष्टि लोग स्वाध्याय करना, तत्त्वविचार करना, व्रतादिक का पालना, अनशनादि करना और पूजा-पाठ करने का तो उत्थापन करते हैं और स्वच्छन्दपने को स्थापित करते हैं; पर यह ठीक नहीं है।

**होना तो यह चाहिए कि अशुभ से बचने के लिए पहले शुभ में लगें फिर शुभ को छोड़कर शुद्धभाव को प्राप्त करें। राजमार्ग तो यही है।**

आजकल ऐसी प्रवृत्ति चल रही है कि स्वाध्याय करनेवालों, जिनागम का पठन-पाठन करनेवालों, बच्चों में धार्मिक संस्कार डालनेवालों, उन्हें जैन तत्त्वज्ञान से परिचित करानेवालों, शिविरों के माध्यम से जैनतत्त्वज्ञान को जन-जन तक पहुँचाने के प्रयास में लगे लोगों को तो ये निश्चयाभासी गृहीत मिथ्यादृष्टि लोग प्रवृत्ति में पड़ा मानते हैं, कहते हैं; उनके प्रति समाज में अरुचि पैदा करते हैं, उन्हें मान को चाहनेवाले कहते हैं; विविध प्रकार से उनकी आलोचना करते हैं, निन्दा करते हैं और इन सबसे विरक्त प्रमाद में पड़े, खाने-पीने में मस्त और आराम की जिंदगी जीनेवाले ये लोग स्वयं को धर्मात्मा समझते हैं, आत्मानुभवी मानकर अभिमान के शिखर पर आरूढ हैं, किसी को कुछ समझते ही नहीं हैं।

अरे, भाई ! यदि किसी ने दस-बीस बच्चों के गले में णमोकार मंत्र डाल दिया; चार मंगल, चार उत्तम और चार शरण समझा दिये; भगवान महावीर के जीवन से परिचित करा दिया तो कौनसा पाप कर दिया ? यदि गाँव-गाँव में पाठशालायें खुलवा दीं, स्वाध्याय की प्रवृत्ति चला दी तो भी कौन सा पाप कर दिया ?

**अरे, भाई ! यदि हमें यह तत्त्वज्ञान प्राप्त हो गया है तो हमारा यह कर्तव्य है कि अपने कल्याण के साथ-साथ अन्य जीवों के कल्याण के लिए, उसे जन-जन तक पहुँचाने का कार्य अपनी शक्ति के अनुसार अवश्य करें।**

यदि पूर्व ज्ञानियों ने ऐसा नहीं किया होता तो यह तत्त्वज्ञान हम-तुम तक भी कैसे पहुँचता ? **अपने गुरु को सच्ची गुरुदक्षिणा तो यही है कि हम उनसे प्राप्त तत्त्वज्ञान को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य करें।**

यही कारण है कि पण्डित टोडरमलजी ने अत्यन्त करुणाभाव से पूरे संतुलन के साथ निश्चयाभासी की उक्त प्रवृत्तियों का निषेध किया है। ●

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २०६

# सोलहवाँ प्रवचन

यह मोक्षमार्गप्रकाशक शास्त्र है। इसका सातवाँ अधिकार चल रहा है। सातवें अधिकार में समागत निश्चयाभासी गृहीत मिथ्यादृष्टि का प्रकरण चल रहा। यद्यपि उक्त प्रकरण पर विगत तीन प्रवचनों में पर्याप्त प्रकाश डाला जा चुका है; तथापि अभी भी कुछ अत्यन्त उपयोगी और अति आवश्यक चर्चा करना अपेक्षित है।

निश्चयाभासी की प्रवृत्ति का चित्रण करते हुए पण्डित टोडरमलजी लिखते हैं –

**''एक शुद्धात्मा को जानने से ज्ञानी हो जाते हैं, अन्य कुछ भी नहीं चाहिए ह्न ऐसा जानकर कभी एकान्त में बैठकर ध्यानमुद्रा धारण करके 'मैं सर्व कर्मोपाधिरहित सिद्ध समान आत्मा हूँ' – इत्यादि विचार से संतुष्ट होता है; परन्तु यह विशेषण किसप्रकार सम्भव हैं – ऐसा विचार नहीं है। अथवा अचल, अखण्ड, अनुपमादि विशेषण द्वारा आत्मा को ध्याता है; सो यह विशेषण अन्य द्रव्यों में भी संभवित हैं। तथा यह विशेषण किस अपेक्षा से हैं – सो विचार नहीं है।**

**तथा कदाचित् सोते-बैठते जिस-तिस अवस्था में ऐसा विचार रखकर अपने को ज्ञानी मानता है।**

**तथा ज्ञानी के आस्रव-बंध नहीं है – ऐसा आगम में कहा है; इसलिए कदाचित् विषय-कषायरूप होता है, वहाँ बन्ध होने का भय नहीं है, स्वच्छन्द हुआ रागादिरूप प्रवर्तता है।[१]''**

इसके चित्त में ऐसा जम गया है कि मैं कर्मोपाधि रहित सिद्ध समान शुद्ध हूँ, अचल हूँ, अखण्ड, अनुपम हूँ; इसकारण ध्यानमुद्रा में बैठकर ऐसे ही विकल्प किया करता है; परन्तु यह इन विशेषणों का वास्तविक अर्थ क्या है, ये कथन किस नय के हैं, इन कथनों का प्रयोजन क्या है ? – इन बातों का विचार नहीं करता। **(शेष पृष्ठ 8 पर...)**

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २०६

# शिवि

# पत्रिका

( पृष्ठ 5 का शेष...)

द्रव्यार्थिकनय के भेदों में यदि एक कर्मोपाधिनिरपेक्षद्रव्यार्थिकनय है तो एक कर्मोपाधिसापेक्षद्रव्यार्थिकनय भी है तथा अचल, अखण्ड, अनुपम तो आकाशादि द्रव्य भी हैं।

बस, यह तो यह मानकर बैठ गया है कि एक शुद्धात्मा को जानने से ही ज्ञानी हो जाते हैं। अत: यह अन्य तत्त्वों के बारे में कुछ सोचना ही नहीं चाहता। **'ज्ञानी के आस्रव बंध नहीं होते'** आगम में समागत उक्त कथन के आधार पर निर्भय होकर कषाय करता है, स्वच्छन्द होकर रागादि में प्रवर्तता है।

ऐसे जीव को समझाते हुए पण्डितजी कहते हैं कि स्व-पर को जानने का चिन्ह तो वैराग्यभाव है। समयसार में भी कहा है कि सम्यग्दृष्टियों को तो नियम से ज्ञान-वैराग्य शक्ति होती है।[१] किन्तु इस निश्चयाभासी मिथ्यादृष्टि जीव की स्थिति का चित्रण आत्मख्याति में समागत १३७वें कलश में किया गया है; जिसका हिन्दी पद्यानुवाद इसप्रकार है -

( हरिगीत )

**मैं स्वयं सम्यग्दृष्टि हूँ हूँ बंध से विरहित सदा।**
**यह मानकर अभिमान में पुलकित वदन मस्तक उठा।।**
**जो समिति आलंबें महाव्रत आचरें पर पापमय।**
**दिग्मूढ़ जीवों का अरे जीवन नहीं अध्यात्ममय।।१३७।।**

'यह मैं स्वयं सम्यग्दृष्टि हूँ, मुझे कभी बंध नहीं होता; क्योंकि शास्त्रों में लिखा है कि सम्यग्दृष्टि को बंध नहीं होता' - ऐसा मानकर जिनका मुख ऊँचा और पुलकित हो रहा है - ऐसे रागी (मिथ्यात्वसहित रागवाले) जीव भले ही महाव्रतादि का आचरण करें तथा समितियों की उत्कृष्टता का आलंबन करें; तथापि वे पापी (मिथ्यादृष्टि) ही हैं; क्योंकि वे आत्मा और अनात्मा के ज्ञान से रहित होने से सम्यक्त्व से रहित हैं। **(क्रमश:)**

मुक्त विद्यापीठ के छात्र ध्यान दें -

## आवश्यक सूचना

श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 द्वारा आयोजित जून 2010 की परीक्षा के प्राप्तांक (परीक्षा परिणाम) संबंधित अभ्यर्थियों को डाक द्वारा भेजे जा चुके हैं। कदाचित् डाक की गड़बड़ी से जिन्हें नहीं मिले हों, वे पोस्टकार्ड द्वारा जानकारी भेजकर मंगवा लेवें।

**नोट : 1. मुक्त विद्यापीठ की परीक्षा पद्धति में कुछ परिवर्तन किये गये हैं। इसके अनुसार अब सत्र प्रतिवर्ष जनवरी से प्रारम्भ होकर दिसम्बर तक चलेगा। प्रथम सेमेस्टर की परीक्षा जून माह एवं द्वितीय सेमेस्टर की परीक्षा दिसम्बर माह में ली जावेगी।**

**2. इसके अनुसार इस वर्ष दिसम्बर में द्वितीय सेमेस्टर की परीक्षा आयोजित की जायेगी; अत: सभी छात्र इसी के अनुसार तैयारी करें। - ओ.पी. आचार्य (विभागाध्यक्ष)**

## सर्वोदय अहिंसा अभियान

**जयपुर (राज.) :** वीर निर्वाण महोत्सव के पावन अवसर पर पटाखों से होने वाली जन-धन की हानि के प्रति लोगों को जागरूक करने और अपने कर्तव्यों का स्मरण दिलाने हेतु अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन जयपुर महानगर द्वारा श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई के सहयोग से सर्वोदय अहिंसा अभियान चलाया जा रहा है।

इस अवसर पर एक पटाखा विरोधी पोस्टर एवं हैंडबिल को लगभग 25000 की संख्या में प्रकाशित कर संपूर्ण देश के जिनमंदिरों, तीर्थक्षेत्रों, विद्यालयों, सार्वजनिक संस्थाओं को भेजा जाएगा। साथ ही पोस्टर डिजाइन की सी.डी., आगजनी की घटनाओं को दर्शाती स्लाइड शो की सी.डी., विद्यालय एवं पाठशालाओं द्वारा मंचन योग्य लघु नाटकों का प्रकाशन एवं एक लघु पुस्तिका का प्रकाशन किया जा रहा है, जिसमें विद्वानों/अध्यापकों के व्याख्यान हेतु तथ्यपरक बिन्दुओं का संकलन है।

आपसे अनुरोध है कि आप भी स्थानीय स्तर पर यह अभियान चलायें। एतदर्थ आपको कितने पोस्टर/सी.डी. की आवश्यकता है तथा आप किन-किन स्थानों पर इनका उपयोग कर सकते हैं, यह लिखकर निम्न पते से प्रचार सामग्री मंगा लेवें - **संजय शास्त्री -** डी 136, सावित्री पथ, बापूनगर, जयपुर-15 मोबाइल - 9509232733

## डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

| | | |
|---|---|---|
| 10 से 19 अक्टूबर | जयपुर | शिक्षण शिविर |
| 21 अक्टूबर | मेरठ | प्रवचन |
| 22 से 24 अक्टूबर | खतौली | सेमिनार व प्रवचन |
| 2 नवम्बर | मंगलायतन विश्वविद्यालय | दीक्षान्त समारोह |
| 4 से 7 नवम्बर | देवलाली | दीपावली |
| 14 व 15 नवम्बर | हेरले (महा.) | जिनमंदिर शिलान्यास |
| 18 से 21 नवम्बर | दिल्ली | अष्टाह्निका महापर्व |
| 17 से 23 दिसम्बर | मंगलायतन | पंचकल्याणक |
| 25 से 31 दिसम्बर | इन्दौर(मालवा) | फैडरेशन यात्रा |
| 2 से 4 जनवरी | उदयपुर | वेदी प्रतिष्ठा |
| 15 से 20 जनवरी | उदयपुर | पंचकल्याणक |

**प्रकाशन तिथि : 13 सितम्बर 2010**

**प्रति,**

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

*यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -*
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
**फोन :** (0141) 2705581, 2707458
**E-Mail :** ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127